

इन वाक्यों में 'क्रिया' के साथ 'कर्म' नहीं है।

अकर्मक क्रिया –

**क्रिया निर्माण विधि :-** छत्तीसगढ़ी में निम्नानुसार क्रिया निर्माण होता है :-

1) क्रिया के अंतिम अक्षर 'ना' की जगह 'बो' या 'बे' का प्रयोग होता है।

जैसे :-

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
करना	करबो
कहना	कहिबो
पकड़ना	पकड़बो
पटकना	पटकबो
काटना	काटबो
रहना	रहिबो

2) शब्द के अंत में आया 'ओ' का उच्चारण 'ए' में बदल जाता है।

जैसे –

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
लो	ले
दो	दे
खाओ	खा ले (खाए)
पीओ	पी ले (पीए)
देखो	देख ले, देखे

3) शब्द के अंत में आकारांत अक्षर 'र' उच्चारित होता है या मूल शब्द में भी परिवर्तित हो जाता है। 'आ' की मात्रा लुप्त हो जाती है, तो कहीं पर मात्राओं में वृद्धि भी हो जाती है।

जैसे :-

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
भरा	भरे
टपका	टपके
गिरा	गिर
कूदा	कूद
गीला	गील
ढीला	ढील
होता	होत
गया	गे

4) 'क्या' के लिए अकेला 'का' बोला जाता है।

जैसे:

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
क्या कर रहे हो ?	का करत हस ?
क्या काट रहे हो ?	का काटत हस ?
क्या रख रहे हो ?	का राखत हस ?
क्या ठोंक रहे हो ?	का ठेंसत हस ?

5) कई जगह पर छत्तीसगढ़ी वाक्यों के शब्दों में 'आ, ओ, 'ई' और 'ऐ' की मात्राएँ शब्दों में लुप्त हो जाती हैं तथा कहीं-कहीं पर इनमें वृद्धि भी हो जाती है।

जैसे :

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
लज्जा	लाज
जाना	जा
खाओ	खा
फूँकते	फूँकत
फूटती	फूटत
लाई	लानेस
गिरती	गिरत

6) हिन्दी की तरह छत्तीसगढ़ी में मूल धातु के साथ 'ना' प्रत्यय जोड़कर क्रिया बनायी जाती है।

जैसे —

धातु	प्रत्यय	क्रिया
अँइठ	ना	अँइठना
छिटका	ना	छिटकना
ठहिर	ना	ठहिरना
बिलम	ना	बिलमना

7) छत्तीसगढ़ी में अनेक क्रियाएँ मूल धातु में 'ब' युक्त होने से बनती हैं। ये 'बांत' क्रियाएँ कहलाती हैं, क्योंकि इन शब्दों के अंत में 'ब' वर्ण का उच्चारण होता है।

जैसे :-

धातु	प्रत्यय	क्रिया
जा	ब	जाब
रेंग	ब	रेंगब
पसर	ब	पसरब
हबर	ब	हबरब

8) छत्तीसगढ़ी में क्रिया शब्द अधिकरण कारक के विभक्ति चिन्ह के साथ प्रयुक्त होने पर नांत क्रियाओं के 'ना' प्रत्यय का लोप हो जाता है और धातु के साथ 'ए' जुड़कर एकारांत को जाता है। जबकि बांत क्रियाएँ अपनी मूलावस्था में रहती हैं।

नांत क्रियाएँ	
क्रिया	विभक्ति युक्त रूप
खाना	खाए मा (खाने में)
गाना	गाए मा (गाने में)
इतराना	इतराए मं (शरारत करने में)
जाना	जाए मां (जाने में)
मतलाना	मतालाए मा (गंदा करने में)

बांत क्रियाएँ	
क्रिया	विभक्ति युक्त रूप
खाब	खाब मा
गाब	गाब मा
इतराब	इतराब मा
जाब	जाब मा
मतलाब	मतलाब मा

9) हिन्दी की भाँति छत्तीसगढ़ी में भी धातुओं के अलावा संज्ञा व विशेषण से भी क्रियाएँ बनती हैं।

जैसे :-

संज्ञा	प्रत्यय	क्रिया
लाज	आना	लजाना (शर्माना)
काम	आना	कमाना (कार्य करना)
मोह	आना	मोहाना (मुग्ध होना)
गोठ	इयाना	गोठियाना (बार्ते करना)

विशेषण	प्रत्यय	क्रिया
करिया	ना	करियाना (काला होना)
गोरिया	ना	गोरियाना (गोरा होना)
चिकना	ना	चिकनाना (चिकना करना)
ढरवा	ना	ढरवाना (ढलवाना)

## काल

**परिभाषा:-** सामान्यतः समय को ही 'काल' कहा जाता है। किसी वाक्य में क्रिया का वह स्वरूप जो कार्य के होने अथवा कार्य के करने का बोध कराता है, काल कहलाता है।

काल तीन प्रकार के होते हैं :

1. **वर्तमान काल-** जो क्रिया शब्द कार्य के अभी-अभी होने का बोध कराते हैं, वे वर्तमान काल कहलाते हैं।

उदाहरण:-

- (1) सूर्य निकल रहा है।
- (2) मैं खेल रहा हूँ।

**परिभाषा:-** वइसे देखे जाय त समे ल ही काल केहे जाथे। कोन्हों डांड, वाक्य में क्रिया के वो रूप जे काम के होय या काम के करे के जनकारी कराथे, उही ला काल केहे जाथे।

काल तीन किसम ले होथे

1. **बरतमान काल-** जेन क्रिया सब्द काम के अभी-अभी होय के जनकारी देथे, वो हा बरतमान काल कहाथे।

उदाहरण:-

- (1) बेर उवत हे।
- (2) मैं खेलत हूँ।

(3) मैं पढ़ाई करता हूँ।

(4) हम प्रतिदिन विद्यालय जाते हैं।

(5) तुम बाजार जाते हो।

जान लें, जिन वाक्यों के अंत में रहा है, रही है, रहे हैं, ता है, ती है, ते हैं या हो आदि होता है, वे वर्तमान काल के सूचक हैं।

2. **भूतकाल**— जो शब्द बीत चुके समय में काम के होने का बोध कराता है, उसे भूतकाल कहते हैं।

उदाहरण:— (1) मैं कल मंदिर गया था।

(2) राम ने मारीच का वध किया था।

(3) मैंने खाना खाया।

(4) हम पुस्तक पढ़ रहे थे।

(5) तुम घर पहुँच चुके थे।

जान लें, जिस वाक्य की क्रिया में था, थी, थे, चुका, चुकी, चुके आदि हों, वे भूतकाल होते हैं।

3. **भविष्यत काल**— जिस क्रिया शब्द से भविष्य (आगे आने वाले समय) का बोध होता है, उसे भविष्य काल कहा जाता है।

उदाहरण:—

(1) हम कल चिड़ियाघर घूमने जाएंगे।

(2) मैं कल रायपुर जाऊँगा।

(3) सीता गाना गाएगी।

(4) मैं रोटी खाऊँगा।

जान लें, जिन क्रिया के अंत में, गा, गे, गी जुड़ा हो, उनसे यह पता चलता है कि काम भविष्य में होगा। यही भविष्य काल का सूचक है।

(3) हमन रोज इसकूल जाथन।

(4) ते गाना गाथस।

ये बात जान लेवन कि जेन वाक्य के आखिर में हे, हँव, हन, थन, थस आथे, वो हा बरतमान काल के पहिचान कराथे।

2. **भूतकाल**— जोन सब्द बीते बेरा—बखत में काम के होय के पहिचान कराथे, वोला भूतकाल केहे जाथे।

उदाहरन:—

(1) काली में मंदिर गे रेहेंव।

(2) राम ह रावन ला मारे रिहिस।

(3) हमन जाम टोरे ल गे रेहेन।

(4) ते गिनती लिखत रेहेस।

ये बात ला जान लेवन कि जेन वाक्य के आखिर में रेहेंव, रेहेन, रिहिस या कहन कि 'इस', 'एन', या 'इन' प्रत्यय वाले सब्द आथे वो हा भूतकाल के पहिचान कराथे।

3. **भबिसत काल**— जेन क्रिया सब्द ले भबिस या आघू अवइया बेरा के पता चलथे, वो हा भबिसत काल होथे।

उदाहरण:—

(1) हमन काली मैतरी बाग घूमे ल जाबो।

(2) काली मोर नाना आही।

(3) में हा अँगाकर खाहूँ।

(4) ते केते डाहर ले आबे?

ये बात ला जानन कि जेन क्रिया के आखरी में आबे, आही, आहूँ, आबो प्रत्यय वालो सब्द आथे वो हा भबिसत काल के पहिचान कराथे।

## अव्यय (अविकारी शब्द)

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
<p><b>परिभाषा:</b>— जिन शब्दों पर लिंग, वचन, काल का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता, जो हमेशा एक से रहते हैं, उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहते हैं। जैसे— यहाँ, वहाँ, धीरे-धीरे, थोड़ा, तथापि, और, क्योंकि, अरे, जो आदि।</p> <p><b>उदाहरण—</b> 1) मैं घर जाऊँगा <b>और</b> हाथ पैर धोऊँगा।  2) परिश्रम करो <b>क्योंकि</b> परिश्रम का फल मीठा होता है।</p> <p>उपरोक्त उदाहरणों में 'और' एवं 'क्योंकि' शब्द के प्रयोग से वाक्य के लिंग, वचन, काल में कोई परिवर्तन नहीं आया। इसलिए ये अव्यय या अविकारी शब्द हैं।</p> <p><b>अव्यय के भेद</b></p> <p>1) <b>क्रिया विशेषण</b>— प्रतिदिन, कम, तेज, कहाँ, यहाँ, अभी, कल, आज, परसों, ऐसे, वैसे, झूठ, सच, थोड़ा, उतना, कितना, बहुत आदि।</p> <p>2) <b>सम्बंधबोधक</b>— पर, के ऊपर, के सामने, के अंदर, के यहाँ, से पहले आदि।</p> <p>3) <b>समुच्चयबोधक (योजक)</b>— और, लेकिन, तथा, ताकि, तो, अतः, अन्यथा, या, अथवा, एवं, व, ताकि, क्योंकि आदि।</p> <p>4) <b>विस्मयादिबोधक</b>— वाह!, अरे!, हाय!, शाबाश!, छीं छीं!, अच्छा!, ओ!, रे!, हे!, हाय-हाय!, बाप रे!, क्या!, सच! आदि।</p>	<p><b>परिभाषा:</b>— जेन सब्द के उप्पर लिंग, वचन काल के कोई असर नइ पड़े, जेन हा सबो जघा एक जइसे रहिथे, वोला अव्यय केहे जाथे। जइसे— अउ, इहाँ, उहाँ, अउ, काबर कि आदि।</p> <p><b>उदाहरण:</b>— 1) मैं नास्ता करहूँ <b>अउ</b> स्कूल जाहूँ।  2) मेहनत कर <b>काबर कि</b> मेहनत के फल मीठ होथे।</p> <p>उप्पर के उदाहरण में 'अउ' के संग 'काबर कि' सब्द के लगे ले वाक्य के लिंग, वचन या काल में कोन्हों बदलाव नइ आय हे। ओकरे सेती ये मन हा अव्यय शब्द हरे। वइसे हमला एक बात अउ जानना जरूरी हे के छत्तीसढ़ी के क्रिया मन में लिंग के भेदभाव नइ हे। जइसे हिन्दी मा लड़का कहे त 'मैं' पुस्तक पढ़ता हूँ इही बात ला लड़की कहे त 'मैं' पुस्तक पढ़ती हूँ फेर छत्तीसगढ़ी में नोनी-बाबू दूनो हा एक्के कही 'मैं' पुस्तक पढ़थों।</p> <p><b>अव्यय के भेद</b></p> <p>1) <b>क्रिया विशेषण</b>— काली, पउर, बिहनिया, एती, लिंघा, घलो, नइ, लटपट, सिरतोन, चिटिक, थोरकुन, बेसी (अधिक), रंचक (रंच मात्र) आदि।</p> <p>2) <b>सम्बंधबोधक</b>— खातिर, खाल्हे, मॉझ, मेर, ले, सन आदि।</p> <p>3) <b>समुच्चयबोधक</b>— अउ, पुन, फेर, के, जेमा, जोन, काबर कि, चाहे, झन, धन, पाके, भलुक आदि।</p> <p>4) <b>विस्मयादिबोधक</b>— अरे ददा रे!, बबा रे!, गजब होगे!, ये दर्ई!, ये ददा!, छी दर्ई!, थू!, धूर रे!, अच्छा! आदि।</p>

# लिंग

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
<p>शब्द के जिस रूप से पुरुष अथवा स्त्री जाति का पता चलता है, वह लिंग कहलाता है।</p> <p>उदाहरण :- 1. राम जाता है। 2. सीता जाती है।</p> <p>यहाँ राम पुरुष जाति का और सीता स्त्री जाति का बोध कराती है।</p> <p>इस प्रकार लिंग दो प्रकार के होते हैं :-</p> <p>1. <b>पुल्लिंग</b> - जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है। जैसे :- रामलाल, कुकरा, घोड़वा, डोकरा।</p> <p>2. <b>स्त्रीलिंग</b> - जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है। जैसे :- रामबती, कुकरी, घोड़वी, डोकरी छत्तीसगढ़ी में कुछ संज्ञा उभयलिंगी होते हैं नपुसंकलिंग नहीं होते हैं। जैसे - जहुरियाँ (समवयस्क स्त्री या पुरुष) परानी (पति या पत्नि) चिरई, लइका, गरुवा, आदि।</p>	<p>सब्द के जेने रूप ले पुरुष (मरद) नई ते नारी (स्त्री) जात के पता चलथे लिंग कहलाथे।</p> <p>जइसे :- 1. राम जावत हे। 2. सीता जावत हे।</p> <p>इहाँ राम ह पुरुष जात ल बतावत हे अऊ सीता लिखे ले नारी जात के पता चलथय, त राम पुल्लिंग अऊ सीता ह स्त्रीलिंग सब्द हरे।</p> <p><b>लिंग के प्रकार</b></p> <p>लिंग दु परकार के होथे :-</p> <p>1. <b>पुल्लिंग</b> :- जेन शब्द ले पुरुष (मरद) जात के पहिचान होथे। जइसे :- रामलाल, कुकुरा, घोड़वा, डोकरा, मास्टर।</p> <p>2. <b>स्त्रीलिंग</b> - जेन शब्द ले नारी (स्त्री) जात के पहिचान होथे। जइसे :- रामबली, कुकरी, घोड़वी, डोकरी, मास्टरिन। छत्तीसगढ़ी म कोनो-कोनो शब्द मन दूनो लिंग म परयोग होथे जइसे - जहुरियाँ (समन्वयक पुरुष या स्त्री) परानी (पति या पत्नि) चिरई, लइका, गरुआ, आनि-आनि</p>



## छत्तीसगढ़ी में लिंग परिवर्तन सामान्य नियम :-

1. छत्तीसगढ़ी में बहुत से संज्ञा अपने मूल रूप में पुरुष लिंग और स्त्रीलिंग रूप में हैं जिसमें :-

पुल्लिंग रूप में - पुरुषों के नाम (मंगलू, चैतू), जीव - जानवर के नाम, (भइसाँ, कउवाँ), ग्रह (शनि, राहु), पहाड़ (काबरा, सिहावा) अन-धन (गेहूँ, चना, धान) धातु (सोना, ताँबा)

स्त्रीलिंग रूप में नारियों नाम (सुकारो, मनटोरा) आखिर में ई से जुड़े शब्द (माटी, लउठी, खेखरी, भुसड़ी) नदी के नाम (शिवनाथ, महानदी,) अन - धन (उरीद-मूँग) आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा शब्द के आखिर में -इन- जोड़ के पुल्लिंग ने स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं।  
जैसे :- किसान-किसानिन, मास्टर - मास्टरिन, देवार ले देवारिन
3. 'वा' या 'रू' प्रत्यय वाला शब्द में 'इया' जोड़ के स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं।  
जैसे :- बछुआ/बछरू - बछिया, पड़वा - पड़िया
4. आखिर में 'ई' जुड़े संज्ञा शब्द में 'निन' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं।  
जैसे :- नाती-नतनिन, ऊँट -उटनिन, बघवा-बघनिन  
ऐसे ही 'ईया' प्रत्यय वाले शब्दों में  
गऊँटियाँ - गउटनिन

## छत्तीसगढ़ी में लिंग बदलना :-

### सामान्य नियम

1. छत्तीसगढ़ी में बहुत अकन संज्ञा मन अपन सिरतोन रूप में पुरुष लिंग अऊ स्त्रीलिंग रूप में हवय जेमा :-

पुल्लिंग रूप में - मरद मन के नाव (मंगलू, चैतू), जीवन-जिनावर के नाँव, (भइसाँ, कउवाँ), ग्रह (शनि, राहु) पहाड़ (काबरा, सिहावा) अन-धन (गेहूँ, चना, धान) धातु में (सोना, ताँबा)

अइसनहा स्त्रीलिंग रूप में नारी परानी के नाव (सुकारो, मनहोरा) आखिर में ई ले जुड़े सब्द (माटी, लउठी, खेखरी, भुसड़ी) नदी के नाव (शिवनाथ, महानदी) अन-धन (उरीद-मूँग) आनि-आनि।

2. जातिवाचक संज्ञा शब्द के आखिर में 'इन' जोड़ के घला पुल्लिंग ले स्त्रीलिंग बनाए जाथे।  
जइसे :- किसान-किसानिन, मास्टर-मास्टरिन, देवार ले, देवारिन
3. 'वा' या 'रू' प्रत्यय वाला शब्द में 'इया' जोड़ के स्त्रीलिंग बनाए जाथे।  
जइसे :- बछुवा/बछरू- बछिया, पड़वा - पड़िया
4. आखिर में 'ई' जुड़े संज्ञा शब्द में 'निन' प्रत्ययलगा के स्त्रीलिंग बनाए जाथे।  
अइसे 'ईया' प्रत्यय वाले शब्द मन में घलोक।  
गऊँटियाँ - गऊँटनिन  
पहाटिया - पहाटनिन

5. कुछ संज्ञा शब्दों में 'आइन' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं।

जैसे :- ठाकुर - ठाकुराइन  
साहेब-साहेबाइन

6. इसी प्रकार आकारांत संज्ञाओं में 'ई' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाते हैं।

जैसे :- दुल्हा-दुलही, डउका-डउकी, टूरा-टूरी

7. कुछ पशु-पक्षियों में लिंग पहचानने के लिए नाम के पूर्व नर या मादा लगा दिया जाता है।

जैसे :- नर गुड़ेला-मादा गुड़ेला

8. ऐसे ही कुछ 'अकारांत' शब्दों के पीछे आ के मात्रा जोड़ के स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं।

जैसे :- मान-माना, श्याम - श्याम

5. कोनो-कोनो संग्या म 'आइन' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनाए जाथे।

जइसे :- ठाकुर - ठाकुराइन  
साहेब - साहेबाइन

6. आखिर म 'आ' लगे संग्या सब्द म 'ई' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनाए जाथे।

जइसे :- दुलहा - दूलही, डउका - डउकी,  
कोंदा-कोंदी, भोभला-भोभली, टूरा-टूरी

7. जीवन जिनावर म लिंग के पहिचान बर उकर नाव के आघू म नर/मादा लगाए जाथे।

जइसे :- नर गुड़ेला-मादा गुड़ेला

8. अइसने 'आ' आखिर वाले सब्द मन के पाछु मा आ के मात्रा जोड़ के स्त्रीलिंग बनाए जाथे।

जइसे :- मान-माना, सयाम-सयामा

## छत्तीसगढ़ी के कुछ पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्द

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
टूरा	टूरी	बाबू	नोनी
दाई	ददा	भाई	बहिनी
फुफा	फुफु	मोसा	मोसी
देवर	देरानी	जेठ	जेठानी
मरद	तिरिया	बेटा	बेटी
ससुर	सास	बोकरा	बोकरी
सोनार	सोनारिन	तेली	तेलीन
कका	काकी	ममा	मामी
भाँचा	भाँची	भतीजा	भतीजी
चाँटा	चाँटी	गाड़ा	गाड़ी
गदहा	गदही	घोड़ा	घोड़ी
पँड़वा	पँड़िया	सारा	सारी
हाथी	हथनिन	बेंदरा	बेंदरी
कुकरा	कुकरी	भइँसा	भइँसी
नाऊ	नवाइन	कोलिहा	कोलिहाइन
जोजवा	जोजवी	घरवाला	घरवाली

## वचन

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
जिन शब्दों से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रूपों से संख्या का ज्ञान होता है, उसे वचन कहते हैं।	'हिन्दी' जइसन छत्तीसगढ़ी में घलोक वचन दो किसम के होथे :- जेन सब्द ले संज्ञा, सर्वनाम, बिसेसन अक्रिया के रूपमन के संख्या के बोध जानबा होथे, ओला वचन केहे जाथे।
जैसे :- लड़का पुस्तक फूल फल रंग	दूरा फूल पुस्तक / किताब फर रंग
(1) एक वचन :- शब्द के जिस रूप से एक वस्तु का बोध होता है, उसे एक वचन कहते हैं। जैसे :- लड़का खाट बैल बकरी नाला मैं वहाँ	प्रकार :- हिन्दी की भाँति छत्तीसगढ़ी में भी वचन दो प्रकार हैं :- 1) एक वचन - सब्द के जेन रूप ले कोनो एक जिनिस के बोध होथे, ओला एक वचन केहे जाथे। जइसे :- दूरा खटिया बइला छेरी नरवा मेहा / में ओहा / वो

(2) बहुवचन :- शब्द के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे :-

लड़कों -

खाटों -

बैलों -

बकरियों -

नालों -

हम -

वे -

टूरा मन

खटिया मन

बइला मन

छेरी मन

नरवा मन

हमन

ओमन/वोम

(अ) छत्तीसगढ़ी में बहुवचन बनाये के नियम :-

छत्तीसगढ़ी में बहुवचन बनाये पर कतको कन 'प्रत्यय' के प्रयोग होथे :-

1) 'न' प्रत्यय

मूल शब्द में 'न' प्रत्यय लगाये ल एक वचन ह बहुवचन बन जाथे -

जइसे :-

एकवचन	बहुवचन
लोग	लोगन
घर	घरन
फर	फरन
पान	पानन

2) 'अन', 'यन', 'स्वन' प्रत्यय

स्वरांत शब्द में 'अन' प्रत्यय के अलगे-अलग रूप के प्रयोग होथे। अकारांत के पाछू 'अन', ईकारांत के पाछू 'यन' अऊ उकारांत के पाछू वन के प्रयोग होथे -

जइसे :-

एकवचन	बहुवचन
डोकरा	डोकरन
बइला	बइलन
डोकरी	डोकरियन
मोटरी	मोटरियन
लाडू	लडूवन
नाऊ	नउवन

3) 'इन', 'एन' प्रत्यय

बोलब में व्यंजनांत, लिखब में अकरांत संज्ञा मन में 'इन', 'एन' प्रत्यय लगथे।

जइसे -

एकवचन	बहुवचन
कान	कानिन
कोस	कोसिन
गाँव	गाँवेन
दाँत	दाँतेन

4) 'मन' प्रत्यय

छत्तीसगढ़ी में 'सजीव' अऊ 'निर्जीव' सबो अऊ संज्ञा सर्वनाम मन में 'मन' प्रत्यय लगथे।  
जइसे —

एकवचन	बहुवचन
लइका	लइका मन
मनखे	मनखे मन
बइला	बइला मन
भइसा	भइसा मन
गाय	गाय मन
रुख	रुख मन
मास्टर	मास्टर मन
ओ (वह)	ओमन (वे)

5. 'न' अऊ 'मन' प्रत्यय के संघरा प्रयोग घलोक छत्तीसगढ़ी में होथे। येला बहुत्व के बलात्मकता केहे जाथे।

जइसे :- लोगनमन

लइकनमन

6. एकरे संगे — संग कोनो —कोनो मेर 'मन' के पाछू में 'न' प्रत्यय जुड़ के 'मनन' के रूप में घलोक बोले लिखो जाथे।

जइसे :-

एकवचन	बहुवचन
नौकर	नौकर मनन
देरानी	देरानी मनन
बराती	बराती मनन